कोरी कल्पना का मूल्य

हैंस क्रिस्टियन एंडरसन की कहानी



स्पेंसर जॉनसन

हिंदी: इंदूजी

कोरी कल्पना का मूल्य

हैंस क्रिस्टियन एंडरसन की कहानी

स्पेंसर जॉनसन

हिंदी: इंदूजी





एक समय की बात है......

बहुत समय पहले डेनमार्क के एक छोटे से गाँव, ओडैन्से, में हैंस क्रिस्टियन एंडरसन नाम का एक लड़का रहता था.

हैंस क्रिस्टियन गरीब लड़का था. अधिकतर समय उसके कपड़े पुराने, पैबंद लगे होते थे और नंगे पाँव पर लकड़ी के जूते पहने वह घूमा करता था. कई बार उसे भूखा ही सोना पड़ता था. पर इन सब कठिनाइयों के बावजूद वह प्रसन्न रहता था. उसकी माँ उसे बहुत प्यार करती थी. जिस कुटिया में उसका परिवार रहता था, उस कुटिया को उसकी माँ साफ और सुंदर रखती थी.





हैंस क्रिस्टियन के पिता जूते बनाते थे और सारा दिन काम करते थे. पर वह अधिक पैसे न कमा पाते थे. लेकिन शाम के समय उन्हें इन बातों की कोई चिंता न होती थी. शाम के समय वह हैंस को कहानियाँ पढ़ कर सुनाते थे-परियों और प्रेतों या सम्राटों और राजकुमारियों की अद्भुत और अनोखी कहानियाँ.

हैंस के पिता उसके लिए खिलौने भी बनाते थे. उसका सबसे सुंदर खिलौना था एक छोटा सा थियेटर जिसमें हैंस कठपुतलियों के साथ छोटे-छोटे नाटक करता था. कठपुतलियाँ हैंस ने स्वयं बनाई थीं.





इन नाटकों का अकेला दर्शक हैंस स्वयं ही हुआ करता था. उसके अधिक मित्र न थे. अद्भुत कहानियाँ सोचने में वह इतना व्यस्त रहता था कि लोग क्या कह रहे थे, वह सुनता ही न था.

हैंस एक साधारण लड़का था-दुबला-पतला, अपनी आयु के लड़कों से कहीं अधिक लंबा. अन्य बच्चे उसका मज़ाक उड़ाया करते थे.

“कोई बात नहीं,” जब भी कोई उसका मज़ाक उड़ाता तब हैंस कहता. “जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तब मैं धनी और प्रसिद्ध हो जाऊँगा. मैं एक महल में रहूँगा और हर दिन चीन के सम्राट के साथ चाय पीया करूँगा.”

फिर गूज़बैरी की झाड़ी के नीचे बनाई गुप्त जगह में वह छिप कर बैठ जाता था. वहाँ अपनी माँ के ऐप्रन और एक झाड़ू को लेकर उसने एक छोटा टैंट बना रखा था. वहाँ आँखें बंद कर के वह कल्पना करता था कि सम्राट के साथ चाय पीने में, एक महल में रहने में, स्वादिष्ट मीठे चॉकलेट खाने में और सुंदर रेशमी वस्त्र और जूते पहनने में कितना आनंद आता होगा.

"कभी-कभी मुझे हैंस की चिंता होती है," उसकी माँ ने एक दिन गाँव की महिलाओं से कहा. "साधारण काम करने से वह कभी संतुष्ट नहीं होगा. वह कोई महान काम करना चाहता है. क्या आप जानती हो कि वह यहीं इसी गाँव में एक महल बनाना चाहता है? हर रात वह अपने महल की योजना बनाता है."

"डरो मत," एक औरत ने कहा. वह बहुत बूढ़ी और अजीब थी. "वह एक जंगली पक्षी की तरह बहुत ऊँचा उड़ेगा. सारी दुनिया उसकी प्रशंसा करेगी और एक दिन उसके कारण हमारे गाँव को रोशनियों से सजाया जाएगा."



बूढ़ी महिला ने यह न बताया कि यह भविष्यवाणी उसने किस आधार पर की थी, पर जब भी हैंस अपनी कठपुतलियों के साथ छोटे थियेटर में कहानियाँ बना कर नाटक रचता, उसकी माँ अक्सर इस भविष्यवाणी के बारे में सोचती. जब वह हॉप्स (एक पौधा) के फूल तोड़ने के लिए हैंस को अपने साथ गाँव ले जाती वह तब भी इसके बारे में सोचती. गांव में हैंस किसानों से पुरानी लोककथाएं सुनता. घर लौट कर वह हर कहानी अपने पिता को सुनाता.

"यह कहानियाँ सच हो सकती हैं," उसकी माँ, जो बहुत अँध-विश्वासी थी, कहती, "लेकिन मैं चाहती हूँ कि हैंस अपनी अधिक समय पढ़ने में बिताए और इन बातों में कम. वह कोई कारीगरी सीख सकता है. वह तुम्हारी तरह जूते बनाना सीख सकता है या एक दर्जी बन सकता है."

"कभी नहीं!" उसके पिता ने ऊँची आवाज़ में कहा. "जूते बनाने या लोगों के कपड़े सिलने के बजाए हैंस कोई बेहतर काम करेगा." और हैंस के पिता अरेबियन नाइट्स पढ़ कर उसे सुनाने लगते.



लगभग इसी समय हैंस ने एक अनोखी बात जानी. उसके एक अध्यापक ने बताया कि चीन पृथ्वी के दूसरी ओर था, डेनमार्क के बिलकुल विपरीत दिशा में. अगर कोई व्यक्ति डेनमार्क में खुदाई करने लगे और बहुत गहरा गड्ढा खोद ले तो वह आदमी चीन में, पिकिंग या शंगाई या किसी अन्य विदेशी नगर में बाहर निकलेगा.

"अगर हम गड्ढा खोद कर चीन पहुँच सकते हैं," हैंस ने अपने आप से कहा "तो क्या कोई चीनी गड्ढा खोद कर डेनमार्क नहीं आ सकता? शायद कोई आ जाए. शायद कोई राजकुमार आ जाए और मेरा सुंदर महल बनाने में मेरी मदद करे."





ऐसी आश्चर्यजनक घटना के न घटने का कोई कारण हैंस को दिखाई न दिया. जितना वह इसके बारे में सोचता उतना ही उसे लगता कि ऐसी घटना उसी क्षण घटित हो रही थी.

"अगर चीन से कोई राजकुमार आ रहा है," हैंस ने सोचा, "वह अवश्य ही नदी के रास्ते आ रहा होगा. नगर में वही सबसे निचला स्थान है. अगर मैं नदी के पास जाकर कोई सुंदर गीत गाऊँ तो राजकुमार मेरी गाना सुनकर तेज़ी से खुदाई करने लगेगा ताकि वह बाहर आकर जान पाए कि कौन गाना गा रहा है."

हैंस अपने पैबंद लगे कपड़े और लकड़ी के जूते पहन कर नदी किनारे आ गया और उस राजकुमार के लिए गाने लगा जो धरती में खुदाई करते हुए चीन से आ रहा था.

हैंस लगातार गाता रहा क्योंकि उसकी आवाज़ बहुत सुरीली थी और उसे गाना अच्छा लगता था. लेकिन चाहे उसने कितना अच्छा क्यों न गाया हो, कोई राजकुमार नदी से बाहर नहीं आया. उसके बजाये एक बतख अपने पांच बच्चों के साथ पानी में तैरती हुई किनारे तक आई. किनारे पर आकर उसने अपने पँख ठीक किए और बच्चों के नदी से दूर ले जाने लगी. लेकिन बतख का एक बच्चा पानी से बाहर न आया.

पानी से बाहर न वाला बतख का पाँचवाँ बच्चा भद्दा था. उसकी टांगें छोटी थीं और शरीर की तुलना में उसके पांव बहुत बड़े थे. उसकी चोंच भी बहुत चौड़ी थी. उसके पंख मुलायम और सपाट नहीं थे. उसके पंख बिखरे और हर ओर फैले हुए थे जिस कारण वह बतख का बच्चा नहीं लग रहा था, वह तो पंखों का बना एक डस्टर जैसा लग रहा था.

माँ-बतख उसकी ओर देख कर चिल्लाई. ऐसा लगा कि जैसे वह गुस्से में उसे झिड़क रही थी. अन्य बच्चे तेज़ी से आगे चलने लगे. पाँचवाँ बच्चा पीछे छूट गया. अपने चौड़े पांव पर जितना तेज़ वह चल सकता था वह चलने लगा.



"चिंता न करो," हैंस ने बतख के पाँचवें बच्चे से कहा. "शायद तुम बतख नहीं हो. शायद तुम एक चेंजलिंग हो. परियाँ एक रात तुम्हें तुम्हारी माँ से चुरा कर ले आई थीं. जब तुम बड़े हो जाओगे तो सब देख लेंगे कि तुम एक सुंदर हँस हो."

जब हैंस ने यह बात कही तो एक बड़ी अनोखी घटनी घटी.



बतख का पाँचवाँ बच्चा कुछ समय के लिए नदी किनारे लगी ऊँची घास में गायब हो गया. फिर वह धीरे-धीरे चलता बाहर आया और उसने प्रश्नवाचक दृष्टि से हैंस की ओर देखा.

“हमेशा चीज़ें वैसी नहीं होतीं जैसी वह दिखती हैं,” हैंस ने कहा. “उदाहरण के लिए, तुम्हें लगता होगा कि नदी किनारे बैठा मैं सिर्फ अपने लिए गा रही हूँ. वास्तव में मैं चीन के राजकुमार का लिए गा रहा हूँ. वह राजकुमार इसी पल धरती में खुदाई करते हुए चीन से यहाँ आ रहा है और मैं उसे उत्साहित कर रहा हूँ.”

बतख का बच्चा अजीब तरीके से आवाज़ निकालने लगा जैसे कि वह हैंस पर हँस रहा हो. फिर बतख ने कहा, “अगर चीन का राजकुमार-या कोई और राजकुमार-नदी से बाहर आ सकता है तो मैं भी एक राजकुमार हूँ. मैं हैमलेट हूँ, डेनमार्क का राजकुमार.”

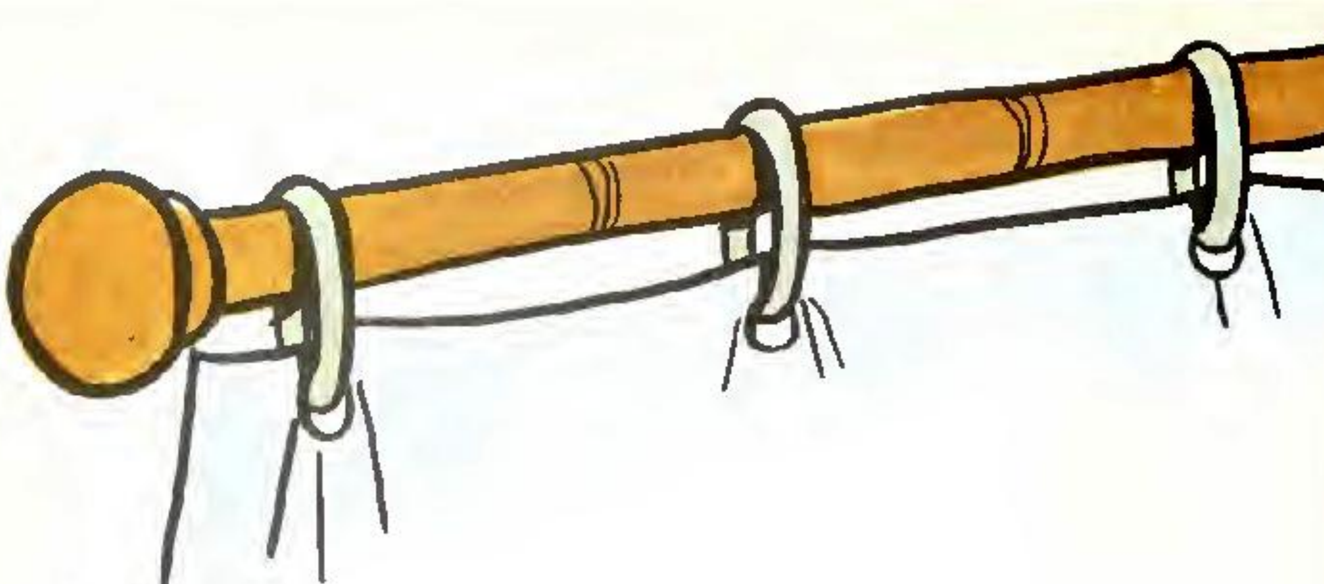




“अगर तुम होना चाहो तो तुम डेनमार्क के राजकुमार हैमलेट क्यों नहीं हो सकते? हैंस ने पूछा. “हैमलेट एक बतख के लिए बहुत ही सुंदर नाम है.”

“तुम जिस नाम से मुझे बुलाना चाहते हो, तुम बुलाओ,” बतख के बच्चे ने कहा. “मेरे लिए सब एक समान है. मैं सच में नहीं हूँ, तुम्हें पता है. मैं सिर्फ तुम्हारी कोरी कल्पना भर हूँ. बतखें लोगों से बात नहीं करती हैं.”

“वह मुझे से बात करती हैं,” हैंस ने कहा. फिर उसने बतख के बच्चे को उठा लिया और उसे अपनी बगल में छिपाये घर आ गया.



“बहुत अच्छा है,” जिस आरामदायक कमरे में हैंस अपने माता-पिता के साथ रहता था, उस कमरे को देखकर हैमलेट ने कहा. वह कमरा वास्तव में अच्छा था क्योंकि उसकी माँ ने दीवारों पर सुंदर रंगीन चित्र लटका रखे थे. एक कोने में लगे शेल्फ में रखे कप और मग और प्लेटें आग की रोशनी में चमक रही थीं.

“मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है,” हैमलेट ने कहा. हैंस की माँ ने उस बैंच को नीचे किया जिस पर हैंस सोता था. हैमलेट को लगा कि इस आरामदायक बिस्तर पर लेट कर आश्चर्यजनक सपने देखने में कितना आनंद आता होगा.

हैंस जब बदसूरत बतख को अपने साथ बिस्तर में सुलाने लगा तो उसकी माँ ने कोई आपत्ति न की, क्योंकि वह उस बतख को देख न सकती थी. बस माँ ने यह देखा कि हैंस कुछ ज़्यादा ही प्रसन्न था. हैंस उस दिन इसलिए अत्यधिक प्रसन्न था क्योंकि उसे एक मित्र मिल गया था जिसे वह अपने साथ रख कर अपने मन की कल्पनाओं के बारे में बता सकता था.

“मैं अपना एक रहस्य तुम्हें बताऊँगा,” हैंस ने हैमलेट से कहा. “एक दिन मैं प्रसिद्ध हो जाऊँगा. एक बूढ़ी महिला ने यह बात मेरी माँ को बताई थी, और तुम जानते ही हो कि बूढ़ी महिलाएं कैसी होती हैं. वह सब जानती हैं.”

“प्रसिद्ध होने के लिए तुम क्या करोगे?” हैमलेट ने पूछा.

हैंस ने कुछ पल सोचा फिर उसने कहा, “मैं एक अभिनेता बनूँगा और स्टेज पर नाटकों में भाग लूँगा. सब मेरे लिए तालियाँ बजाएंगे.”



हैमलेट के साथ भेंट के कुछ दिन बाद ओडैन्से की साधारण सी गली में स्थित हैंस के छोटे से घर पर भारी विपदा आन पड़ी. उसके पिता बीमार हो गए और चल बसे.

“अब तुम क्या करोगी?” पड़ोसियों ने हैंस की माँ से पूछा. वह सब हैंस को ऐसे अनोखे ढंग से देखने लगीं कि हैंस घबरा कर भयभीत हो गया.

“तुम्हारे पास तो कोई पैसे भी नहीं हैं,” एक महिला ने हैंस की माँ से कहा.

हैंस की माँ को इस बात का अहसास था. उसे याद दिलाने की ज़रुरत नहीं थी. “मैं कपड़े धोने का काम कर लूँगी,” उसने निर्भीकता से कहा.





“यह लड़का मदद कर सकता है,” उस औरत ने कहा. “देखो, वह ग्यारह साल का है, और अच्छा, लंबा लड़का है. उसे कपड़ा मिल भेज दो, वह वहाँ काम कर सकता है.”

“मुझे समझ नहीं आता कि वह तुम्हें अच्छा, लंबा लड़का कैसे कह सकते हैं,” हैमलेट ने कहा. “तुम एक फूहड़ लड़के हो, तुम्हारे जूते भी तुम्हारे पाँव के लिए बहुत बड़े हैं और तुम्हारे बाज़ू की कोहनियाँ भी कमीज़ से बाहर दिख रही हैं. और अगर तुम कपड़े की मिल में काम करने लगे तो अभिनेता कब बनोगे?”

“मैं अभ्यास करूँगा,” हैंस ने कहा. “मैं फोरमैन और अन्य श्रमिकों के सामने गाया करूँगा, वह मेरे अभिनय और गायन को पसंद करेंगे. तुम देखना!”

“मैं आशा करता हूँ कि ऐसा ही होगा,” हैमलेट ने कहा, “पर मुझे लगता है कि ऐसा होगा नहीं.”

“तुम अधिक ही चिंता करते हो,” हैंस ने कहा. “मैं एक दिन प्रसिद्ध अभिनेता बनूँगा. बूढ़ी महिला ने कहा था.”

एक रुमाल में रोटी और पनीर का लंच बांधे, हैंस कपड़ा मिल की ओर चल दिया.





“मैं भविष्य के किसी दिन की चिंता नहीं कर रहा,” हैंस के पीछे पैर घसीट कर चलते हुए हैमलेट ने कहा, “मैं आज की चिंता कर रहा हूँ.”

जब वह कपड़ा मिल पहुँचे तो हैमलेट एक बड़े करघे के ऊपर बैठकर हैंस को काम करते हुए देखने लगा.

हैंस ने सबसे पहले फोरमैन और फैक्टरी में काम करने वाले कुछ मज़दूरों के लिए एक गीत गाया. फिर उसने कविता सुनाई. सुनाते समय वह बाज़ू हिला रहा था और बीच-बीच में ऊँची आवाज़ में बोल रहा था. कुछ समय तक लोग धैर्य से उसे सुनते रहे फिर वह हैंस का मज़ाक उड़ने लगे और उसकी नकल करने लगे. वह भी अपने बाज़ू हिलाने लगे और कुछ ने चिल्लाकर कहा कि हैंस एक टूटी हुई पवन-चक्की जैसा दिखाई पड़ रहा था.

“मुझे इसी बात का डर था,” हैमलेट ने कहा. “दुनिया हैंस के लिए तैयार नहीं है-या फिर हैंस दुनिया के लिए तैयार नहीं है.”

उस रात हैंस घर आया तो उसकी आँखों से आँसू टपक रहे थे.

"कोई बात नहीं, हैंस," उसकी माँ ने कहा जब उसने हैंस को निराशा से सिर और कंधे झुकाये घर की ओर आते देखा. "तुम्हें उन अभद्र लोगों के पास दुबारा जाने की ज़रुरत नहीं है."

पड़ोस की महिलाओं ने कहा कि कपड़ा मिल में काम करने वाले लोग में विनम्रता नहीं थी. "लेकिन नसवार की फैक्टरी के बारे में क्या विचार है?" एक महिला ने कहा, "नसवार बनाना अच्छा काम है और सरल भी."

तो इस तरह माँ ने फैसला लिया कि हैंस नसवार की फैक्टरी में अपना भाग्य आज़मायेगा.



"मेरा विचार है कि इस बार मैं फैक्टरी के मज़दूरों के लिए नहीं गाऊँगा," उसने हैमलेट से कहा, "जो मुझे करने को कहा जाएगा मैं बस वही करूँगा."

"मुझे लगता है कि यही ठीक होगा," हैमलेट ने सहमति जतलाई "जो लोग फैक्टरी के मालिक हैं वह भी शायद इस बात से प्रसन्न होंगे."





नसवार की फैक्टरी में हैंस लग्न से मन लगा कर मेहनत करने लगा. उसने अपने अभिनय का कोई प्रदर्शन नहीं किया. लेकिन वह अपने मन की उड़ान पर नियंत्रण न लगा पाया. नसवार बनाने के बजाय वह अपने कल्पना जगत में राजकुमारों और जलपरियों. जादूगर और जादूगरनियों के साथ समय बिताने लगा.

"अरे, एंडरसन!" फोरमैन चिल्लाया, "ध्यान से काम करो!"

हैंस उछल पड़ा और छींकने लगा. हैमलेट को भी छींक आ गई. ऐसी जगह में अपनी छींक कौन रोक सकता था? हवा में हर ओर नसवार, जो तम्बाकू का पाउडर ही थी, फैली हुई थी.

हैंस जब घर पहुँचा तब भी वह छींक रहा था और लगातार छींकने से उसकी आँखें लाल हो गई थीं और उनसे पानी बह रहा था.

"तुम बीमार हो!" उसकी माँ ने कहा. उसने हैंस के गले की जांच की, उसका गला लाल हो चुका था. यह देखने के लिए कि उसे बुखार तो नहीं था माँ ने उसका माथा छूआ.

"यह नसवार है जिसके कारण छींके आ रही हैं," हैंस ने कहा.

"हे भगवान!" मां ने कहा, "यह तुम्हारे फेफड़ों के लिए हानिकारक है. हैंस तुम्हें वहाँ जाने की ज़रुरत नहीं है. इस काम से तुम्हारी मृत्यु हो सकती है."

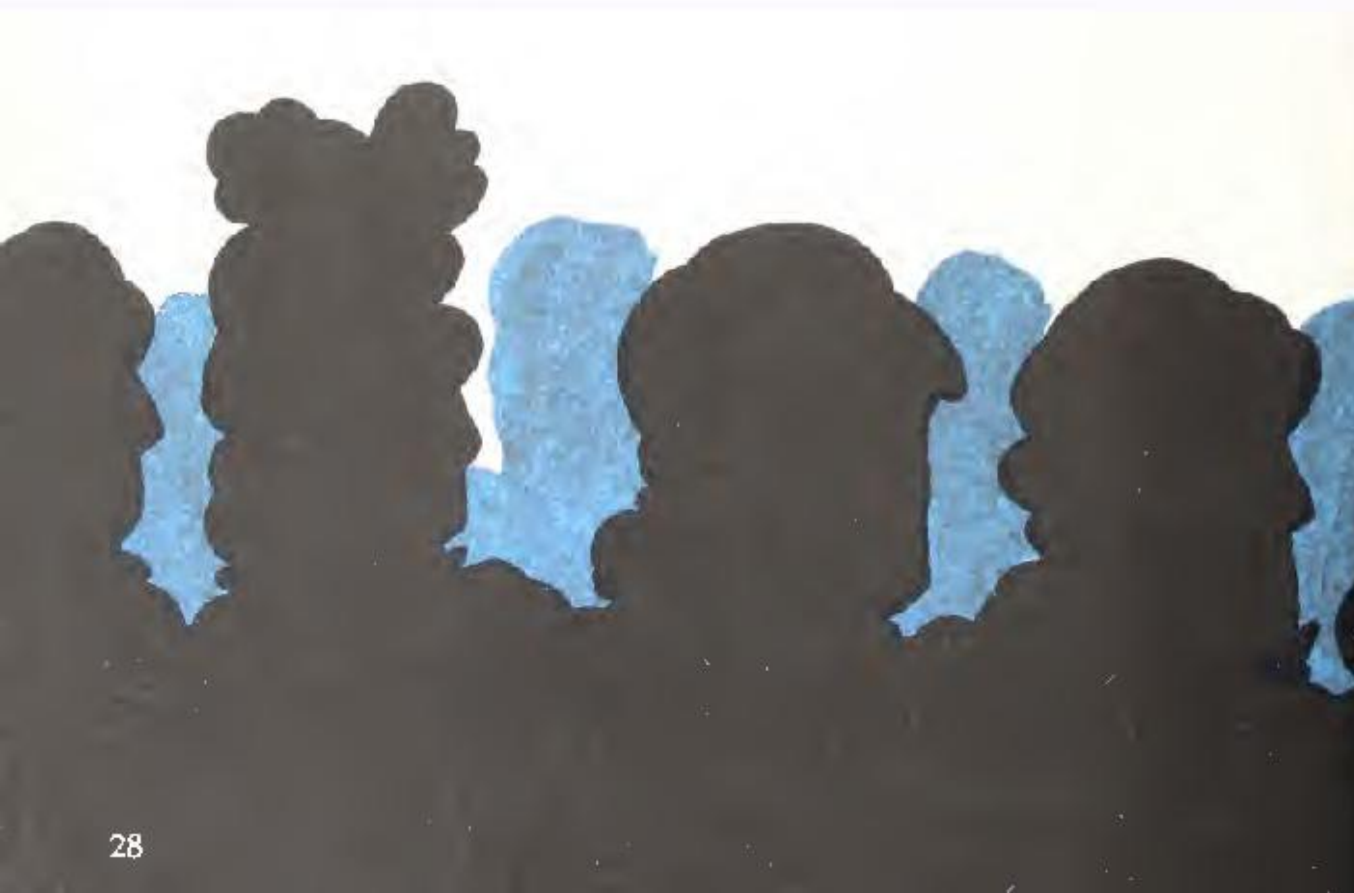


हैंस नसवार की फैक्टरी में दुबारा न गया. उसे अपने फेफड़ों को लेकर कोई चिंता न थी. उसे अपनी आवाज़ की चिंता थी. अगर उसे एक दिन अभिनेता बनना था तो उसे अपनी आवाज़ का ध्यान रखना ही था.

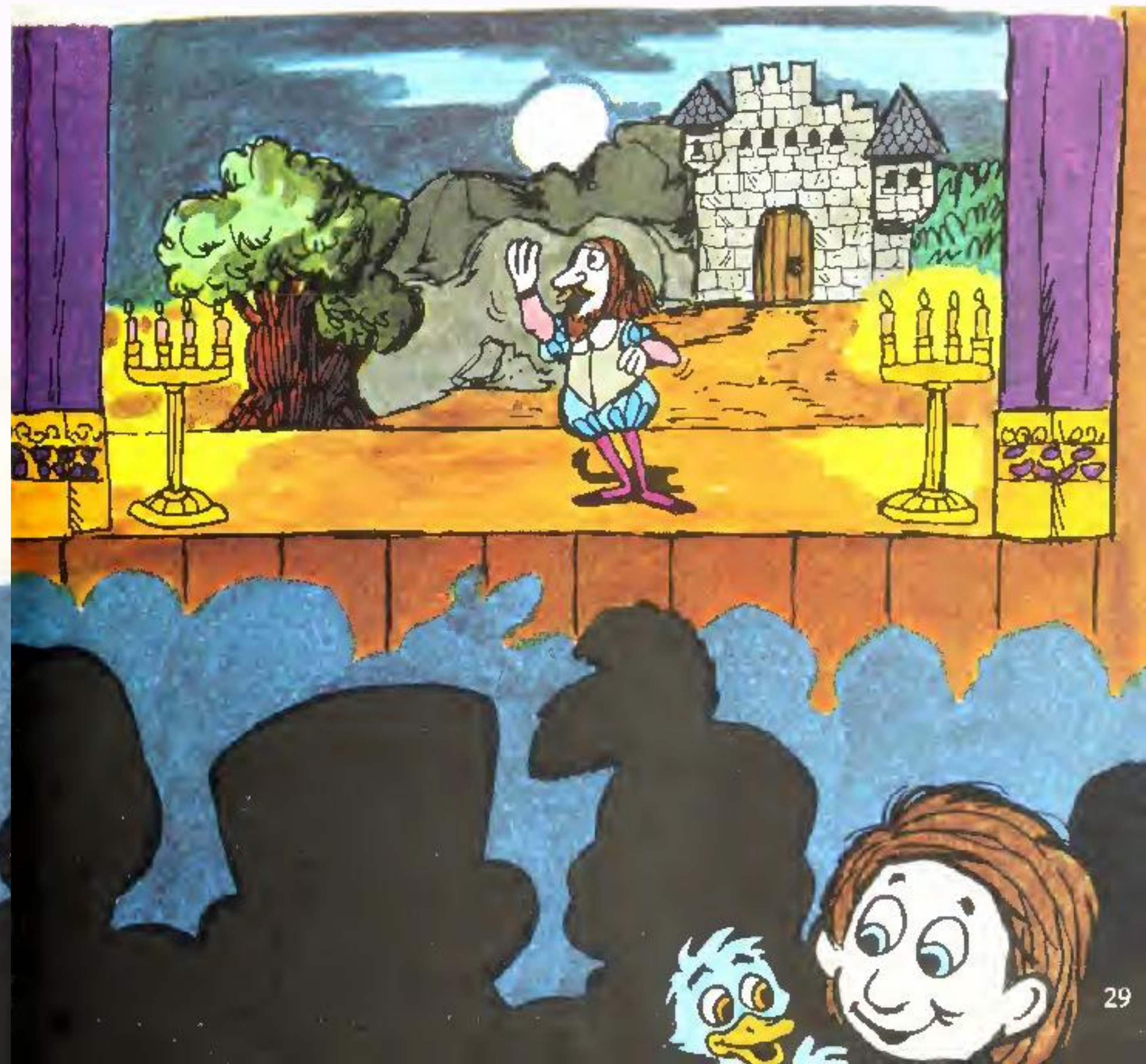
इसलिए काम पर जाने के बजाय हैंस अपने घर में ही रहा. जब उसे अवसर मिलता तो वह गाँव की महिलाओं के लिए अभिनय करता. जेब खर्च के लिए वह उसे थोड़े पैसे दे देतीं और पढ़ने के लिए अपनी किताबें उसे उधार देतीं.

हैंस एक बार-सिर्फ एक बार थियेटर देखने गया. नाटक और स्टेज की रोशनियाँ, दर्शक और उनकी उत्तेजना- देखकर वह इतना रोमांचित हुआ कि कई सप्ताह तक वह सो भी न पाया. अपने कठपुतली के थियेटर में वह अधिक से अधिक समय बिताने लगा. कठपुतलियों के खेल के लिए वह अनोखे नाटकों की कल्पना करने लगा.

"बहुत खूब," हैमलेट ने कहा, "पर क्या तुम अपना सारा जीवन इन कठपुतलियों के साथ खेलते हुए बिताना चाहते हो?"



"निःसंदेह मैं ऐसा नहीं करूँगा," हैंस ने कहा. "बड़ा होते ही मैं कोपनहेगन चला जाऊँगा. मैं तब तक ओडैन्से वापस नहीं आऊँगा जब तक मैं प्रसिद्ध और धनी नहीं हो जाता. फिर मैं एक घोड़ा-गाड़ी में सवार होकर आऊँगा और शानदार कपड़े पहने हुए सराय के पास गाड़ी से उतरूंगा. हर कोई कानाफूसी करेगा, 'वो है हैंस क्रिस्टियन! विधवा एंडरसन का बेटा!'"



लेकिन विधवा एंडरसन अधिक समय तक विधवा एंडरसन न रही. जब हैंस तेरह वर्ष का हुआ तो उसकी माँ ने दूसरा विवाह कर लिया. उसका सौतेला पिता उसके पिता समान, जूते बनाने वाला था.

“वह हंसमुख व्यक्ति है,” जब माँ का नया पति उस कुटिया में आया जहाँ हैंस के पिता काम करते थे तब हैमलेट ने कहा. “वह तुम्हारी माँ को चाहता है.”





यह सच था पर हैंस को बड़ा अजीब लगा जब वह आदमी उसके पिता के बैंच पर बैठ कर काम करने लगा और उसकी माँ को पत्नी बुलाने लगा.

“मुझे लगता है कि अगर मैं यहाँ से चला जाऊँ तो उसे मेरी कमी नहीं खलेगी,” हैंस ने से कहा. “मुझे लगता है कि कोपनहेगन जाकर काम शुरु करने का समय आ गया है.”

और जब हैंस मुश्किल से चौदह वर्ष का था, उसने बैंक से अपनी जमा-पूंजी निकाल ली जो उसने कई वर्षों में इकट्ठी की थी और महानगर की ओर चल पड़ा.



कोपनहेगन की ओर जाने वाली घोड़ा-गाड़ी छोटे-बड़े नगरों के बीच से होते हुए गांव के ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर हिचकोले खाते हुए आगे चली जा रही थी. फिर वह एक फैरी पर चढ़ गई जिस पर सवार होकर पानी के उस विस्तार को पार करना था जिसका नाम ग्रेट बेल्ट था.

जैसे ही फैरी चलने लगी, हैंस ने किनारे की ओर देखा. उसने पानी में उठती लहरों को देखा. "ज़रा सोचो, हैमलेट," उसने कहा, "इस पानी के नीचे शायद कोई अन्य राज्य है. क्या तुम्हें पानी के अंदर महल और किलों के मीनार दिखाई नहीं दे रहे? नीचे पानी में गलियों के अंदर जलपरियाँ तैर रही हैं और जब वह एक-दूसरे के पास से निकलती हैं तो झुककर अभिवादन करती हैं. और अगर हम ध्यान से देखें तो किसी जलपरी को पानी से बाहर आकर, इधर-उधर देखता भी पाएंगे."

"अगर वह बाहर आती हैं तो मुझे वह वहाँ पर नहीं पाएंगी." हैमलेट ने कहा, "एक नदी में पली हुई बतख के लिए इस विशाल सागर में तैरना संभव नहीं है."

एक लंबे अंतराल के बाद फैरी दूसरे किनारे पर आ पहुँची. घोड़ा-गाड़ी फिर से हिचकोले खाती छोटे बड़े नगरों के बीच से गुज़रती आगे चल दी. और आखिरकार जब हैंस और हैमलेट को लगने लगा था कि वह तब से यात्रा कर रहे थे जब दुनिया बनी थी, उन्हें चालक की पुकार सुनाई दी.

"वह रहा कोपनहेगन," वह चिल्लाया.

तुम जानते हो हैंस ने क्या देखा था?



उसने दूर कोपनहेगन के मीनार देखे थे.

"एंडरसन, मैं यहीं तक तुम्हें ला सकता था," उसने हैंस से कहा. "उसके आगे का रास्ता तुम्हें चल कर तय करना होगा.

हैंस प्रसन्नता से नीचे आ गया लेकिन हैमलेट गुस्से में किकियाने लगा. "क्या बात है?" बतख ने पूछा. "कोई भी गाड़ी से बाहर नहीं आया. हम गाड़ी में सवार होकर नगर के अंदर क्यों नहीं जा सकते?"



"क्योंकि कोपनहेगन तक का किराया देने के लिए मेरे पास पर्याप्त पैसे नहीं थे," हैंस ने कहा. "गाड़ी चालक ने कहा था कि वह मुझे गाड़ी में तभी बैठने देखा अगर मैं नगर के बाहर ही उतर जाऊँ, ताकि अधिकारियों को यह पता न चले कि उसने कम किराए में मुझे यात्रा करने दी थी."

"अरे यार," गाड़ी के जाते ही हैमलेट ने दुखी स्वर में कहा. "कोपनहेगन तक बहुत दूर चलना पड़ेगा और मेरी टांगें कितनी छोटी हैं."



"कोई समस्या नहीं," हैंस ने हँसते हुए कहा. फिर उसने बतख को उठा कर अपने थैले में रख लिया और कोपनहेगन की ओर चल दिया. तो इस तरह हैमलेट बड़े आराम से कोपनहेगन आ गया. उसका सिर हैंस के थैले से बाहर था और पाँव हैंस की शर्ट के अंदर.

“अरे,” महानगर के रास्तों पर जब हैंस बतख को उठाए चल रहा था, हैमलेट ने कहा. “इन लोगों को देखो! यहाँ हज़ारों-हज़ारों लोग हैं- और सब एक साथ बातें कर रहे हैं.” हैंस ने मुस्कराते हुए कहा, “शीघ्र ही यह लोग मेरे बारे में बातें कर रहे होंगे. “बस थोड़ी प्रतीक्षा करो.”

“तुम बहुत ही विनम्र लड़के हो,” हैमलेट ने कहा.





“बूढ़ी महिला ने कहा था कि एक दिन मैं प्रसिद्ध हो जाऊँगा,” हैंस ने कहा. “थियेटर में एक रोल के लिए मेरा स्वर-परीक्षण होगा और निश्चय ही मुझे अभिनय के लिए चुन लिया जाएगा.”

और हैंस झटपट उस घर की ओर चल दिया जहाँ रॉयल थियेटर के निदेशक रहते थे.

“मुझे लगता है कि यह यात्रा घोड़ा-गाड़ी की यात्रा से अधिक कष्टकारक होगी,” हैमलेट उदास आवाज़ में कहा.

“विश्वास रखो,” हैंस ने ऊँची आवाज़ में कहा. “मैं असफल कैसे हो सकता हूँ? मेरे भाग्य में लिखा है कि एक दिन मैं महान बनूंगा.”

इतना कह कर हैंस ने दरवाज़े की घंटी बजाई.

तुम्हें क्या लगता है, क्या हुआ होगा?

एक छोटी, सुंदर नौकरानी ने दरवाज़ा खोला. एक पतले, बिखरे हुए बालों वाले लंबे लड़के को देख कर वह हैरान हो गई, लड़के का कोट सिलवटों से भरा था और पतलून पर पैबंद लगे थे. लेकिन हैंस में कुछ ऐसा था जो उसे अच्छा लगा. इसलिए वह भाग कर निदेशक के पास गई और उन्हें बताया कि कोई उनसे मिलने आया था.

हैंस को भीतर बुलाया गया और उसके साथ अच्छा व्यवहार किया गया. उसने कुछ संवाद उन्हें सुनाए. निदेशक ने उसको सुना लेकिन जब हैंस अपने हाथ हिलाने लगा तो उनकी त्यौरी चढ़ गई. फिर जब हैंस ने उनके लिए एक छोटा सा गाना गाया तो वह मुस्कराये. उनका मानना था कि उसका नृत्य आकर्षक था.





"हे भगवान!" हैमलेट ने कहा, "हैंस क्रिस्टियन की कल्पनाएं उतनी काल्पनिक नहीं हैं जितना मैंने सोचा था.

जब हैंस ने अपनी सारी प्रतिभाओं का प्रदर्शन कर लिया जो निदेशक थोड़ा गंभीर हो गए. "तुम्हारी आवाज़ मधुर है," उन्होंने कहा. "लेकिन तुम्हारी अन्य प्रतिभाओं के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता. तुम सिबोनी से क्यों नहीं मिलते. वह रॉयल सिंगिंग अकैडमी के निदेशक हैं. वह शायद तुम्हें कोई अवसर दें."

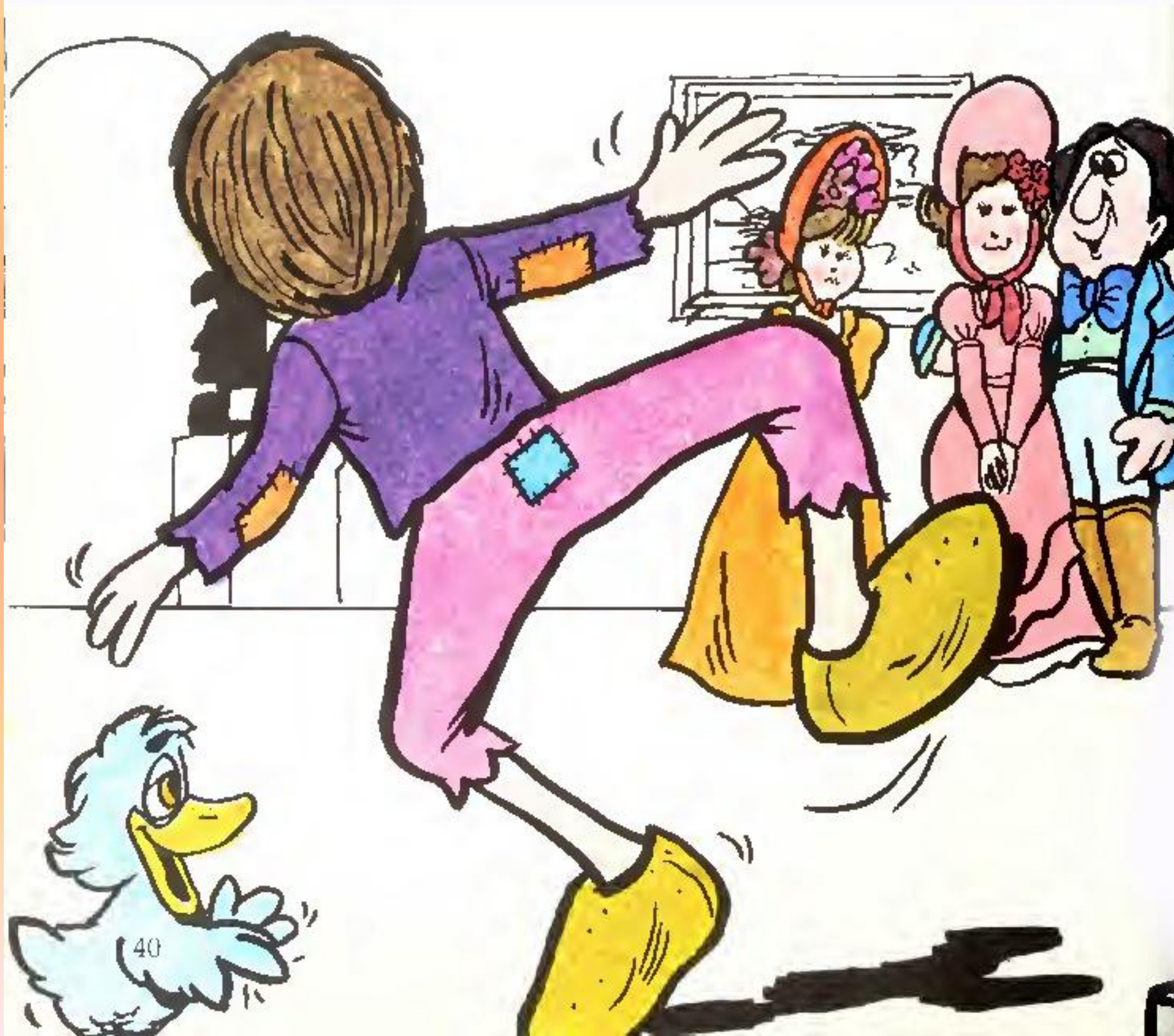
"एक गायक होना लगभग एक अभिनेता के समान ही है," हैमलेट ने कहा. "गायक बन कर तुम उतने ही प्रसिद्ध हो सकते हो."

"निःसंदेह मैं प्रसिद्ध हो सकता हूँ," हैंस ने चिल्लाकर कहा. और उसने निदेशक को प्रसन्नता से धन्यवाद कहा. और फिर वह लगभग भागते हुए सिनोर सिबोनी के घर गया.

इतालवी संगीतकार उस समय एक भोज में भाग ले रहे थे. पर हैंस एक पल के लिए भी नहीं रुका. वह सबके सामने खड़े होकर, शानदार पुरुषों और सुंदर महिलाओं के लिए गीत गाने लगा.

“कितना अनोखा है,” महिलाओं ने कहा. एक महिला उसे ऐसे देख रही थी कि जैसे वह किसी दूसरी दुनिया से आया जीव हो.

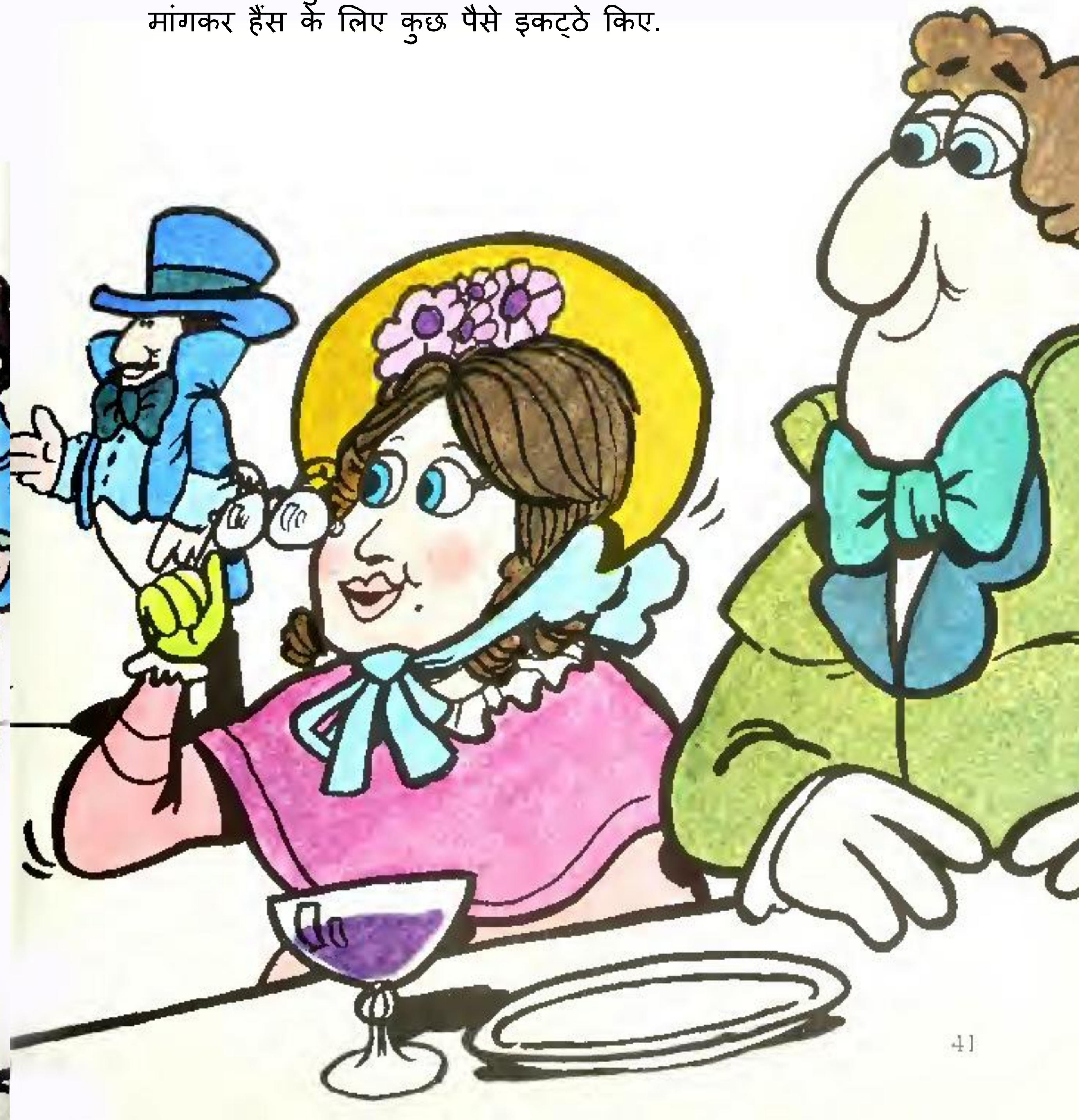
“लड़का ईमानदार है और इसकी आवाज़ बुरी नहीं है,” सिबोनि ने कहा. “शायद मैं इससे कुछ काम ले सकता हूँ.”



सिबोनि ने मुस्कराते हुए हैंस से कहा, “मुझे लगता है कि तुम धनी नहीं हो.”

हैंस ने अपने पुराने फटे हुए कपड़ों को देखा और शरमा गया. “मेरे पास कोई पैसे नहीं हैं.” उसने कहा.

“देखते हैं कि क्या किया जा सकता है,” एक मेहमान ने कहा. वह एक दयालु संगीतकार था और उसने उसी समय लोगों से मांगकर हैंस के लिए कुछ पैसे इकट्ठे किए.

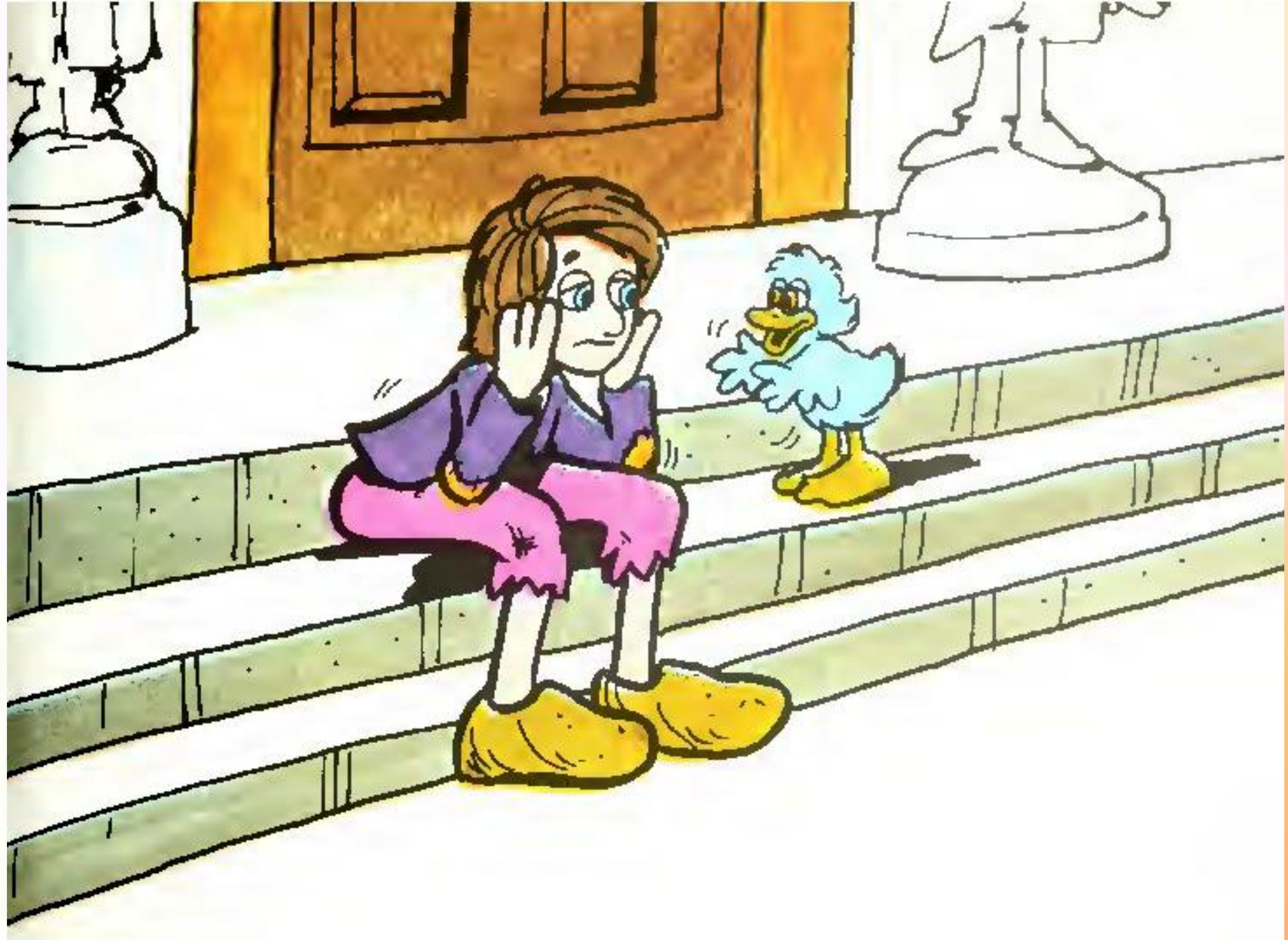


"ओडेन्से की वह बूढ़ी महिला शायद जानती थी कि वह क्या भविष्यवाणी कर रही थी," हैमलेट ने कहा. "सिबोनी हैंस को संगीत सिखाएगा और प्रसिद्ध होने तक के लिए अब उसके पास कुछ पैसे भी हैं."

लेकिन छह माह भी न बीते थे कि हैंस के साथ एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी. हैंस अपनी आवाज़ खोने लगा.

"मेरे अभागे बच्चे," सिबोनी ने कहा, "खेद की बात है पर कोई कुछ भी नहीं कर सकता. कभी-कभी ऐसा होता है कि आवाज़ खराब हो जाती है. अब तुम्हें कुछ और करना होगा."





हैंस धीरे-धीरे चलते वापस आया.

"कुछ और करना होगा?" हैंस ने दुखी मन से कहा. "वह क्या हो सकता है? रॉयल थियेटर के निदेशक कहते हैं कि मैं अभिनेता नहीं बन सकता. नर्तक बनने के लिए मेरी लंबाई अधिक है....."

"और तुम बेडौल भी हो," हैमलेट ने कहा लेकिन उसने अप्रिय लहजे में नहीं कहा. "तुम्हें शायद प्रसिद्ध होने का सपना छोड़ देना चाहिए," उसने कहा. "क्यों न तुम ओडेन्से लौट जाओ. वहाँ पर कोई कारीगरी का काम सीखो-अपने पिता की तरह."

तुम्हें क्या लगता है कि हैंस ने ऐसा ही किया होगा?

बिलकुल नहीं. "जब मैं घर जाऊँगा तो मैं एक राजकुमार की तरह जाऊँगा." उसने कहा और अगले तीन वर्षों तक वह और हैमलेट कोपनहेगन में भटकते रहे. वह दयनीय हालत में घरों के सबसे ऊपरी कमरों में रहते थे. बारिश से बचने के लिए हैंस अपने जूतों को कागज़ से लपेट लेता था. जो कपड़े उसके दयालु मित्र उसे देते थे वही वह पहनता था.

"यह बहुत छोटा है," एक दिन जब हैंस एक पुराना स्वेटर, जो उसे बहुत पंसद था, पहन रहा था तब हैमलेट ने कहा.

"अगर मैं सीधा न खड़ा रहूँ तो किसी को पता न चलेगा," हैंस ने कहा. छोटा दिखने के लिए उसने अपना कंधे झुका लिए और वह ऐसे छोटे-मोटे काम की तलाश में निकल पड़ा जो वह कर सकता था. कभी-कभी वह धनी लोगों के घरों में उनके अतिथियों के सामने गीत गाता था और कभी-कभी उसे रॉयल थियेटर में भीड़ का हिस्सा बनने का काम मिल जाता था.





"आजीविका कमाने के यह बेकार तरीका है," हैमलेट ने शिकायत की. "कोई भी अन्य तरीका इससे बेहतर होगा. तुम्हारे पिता एक अच्छे और सम्मानित जूते बनाने वाले कारीगर थे और......"

"और एक अच्छा, सम्मानित जूते बनाने वाला कारीगर होना उन्हें बिलकुल भी पसंद नहीं था," हैंस ने चिल्लाकर कहा. "वह चाहते थे कि मैं जीवन में कुछ अच्छा काम करूँ. मैं उनसे बेहतर बनूँगा. अगर मैं अभिनेता या गायक नहीं बन सकता तो मैं एक कवि बनूँगा."

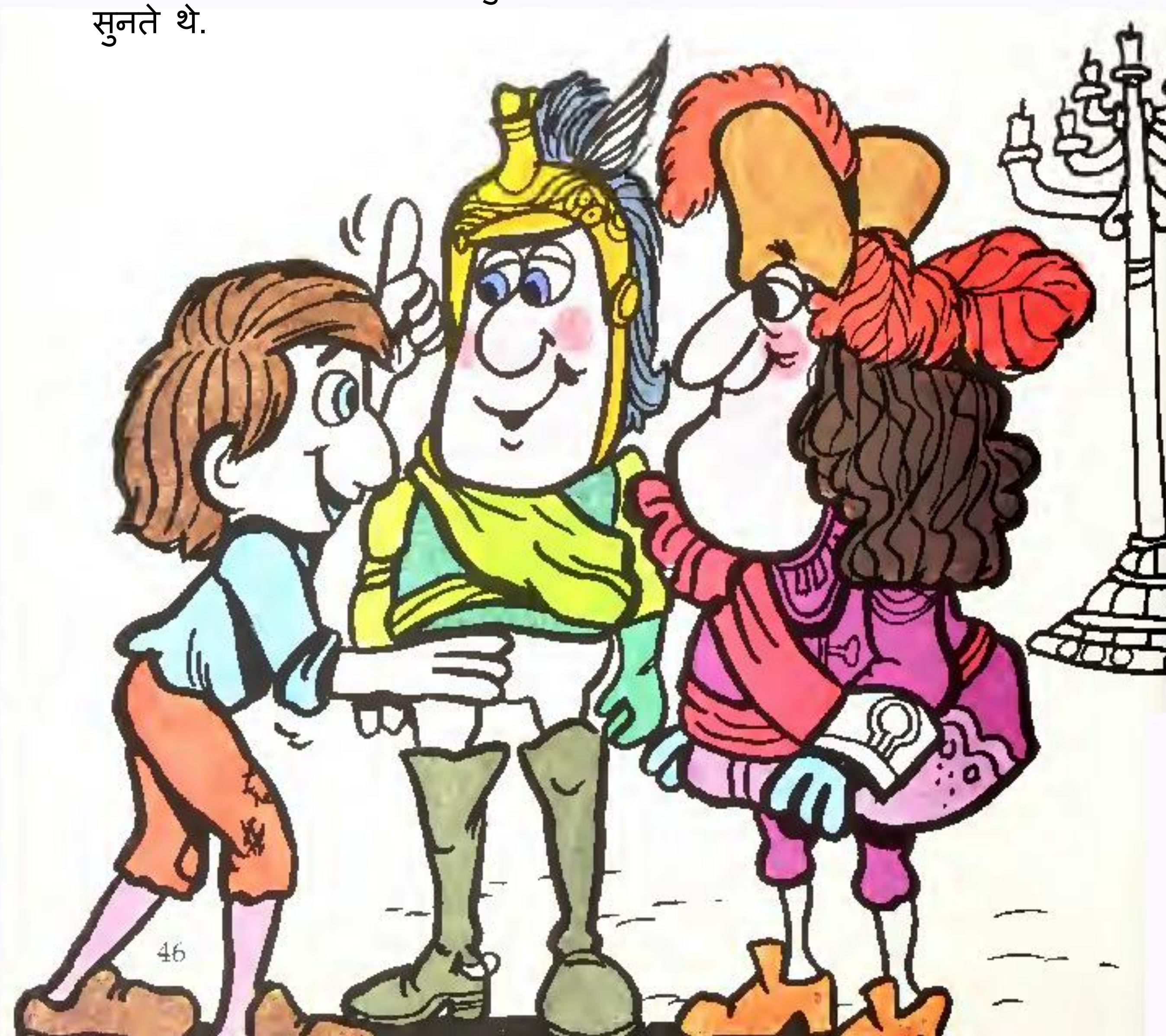
और हैंस लिखने लगा. उसने अद्भुत, ज़ोरदार नाटक लिखे, रोमांचक नाटक लिखे, धारा-प्रवाह, भावपूर्ण कविताएं रचीं.

शीघ्र ही उसके पास पांडुलिपियों का ढेर लग गया जिन्हें लेकर वह हर जगह जाता.

"अनोखी बात है," उसके लिखे पन्नों को उलटते-पलटते हुए हैमलेट ने कहा, "तुम जानते हो कि तुम शब्दों के हिज्जे भी नहीं जानते, लिखना तो दूर की बात है."

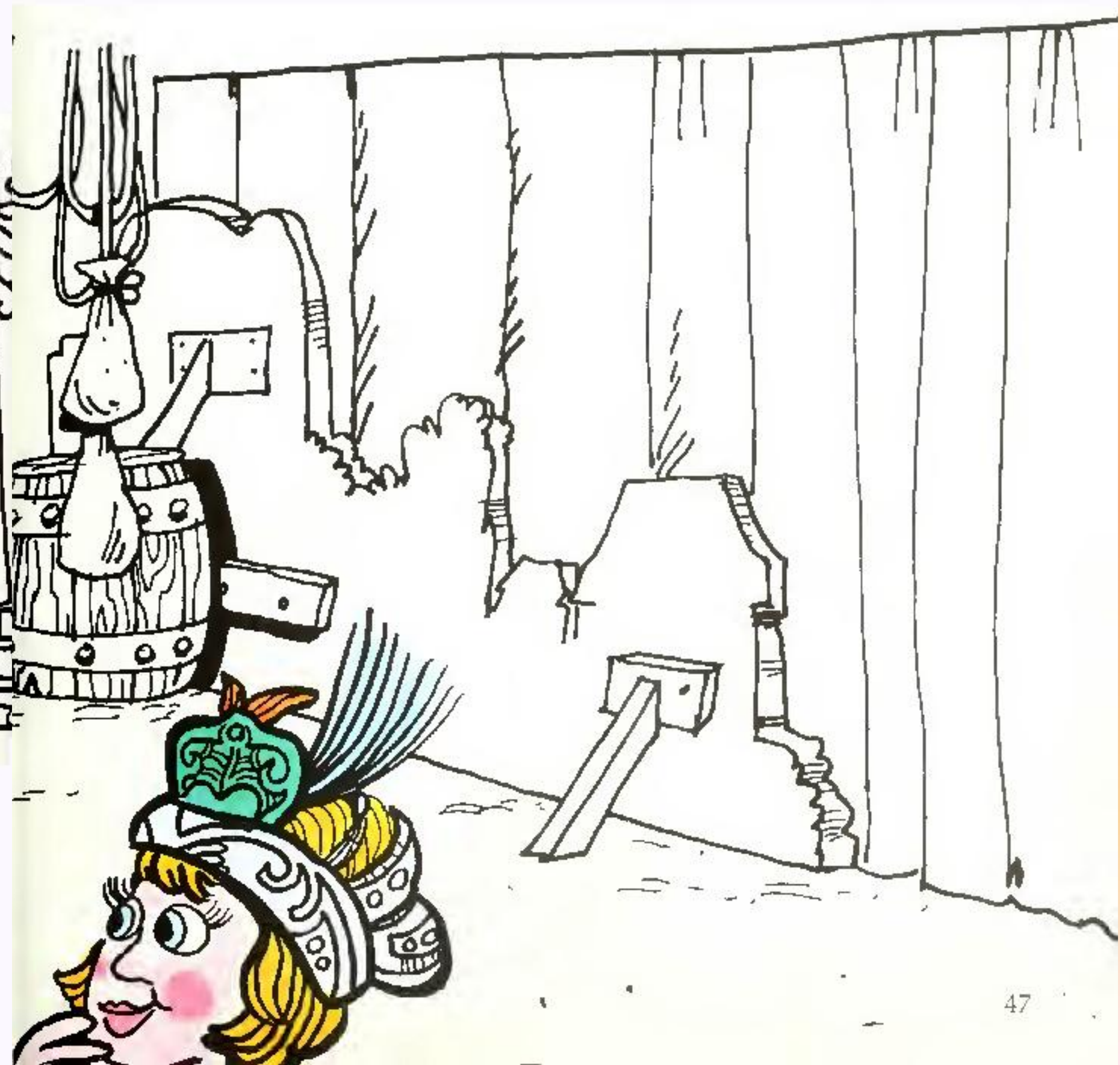
"शब्दों के सही हिज्जे तो मात्र विवरण की बात है," हैंस ने कहा. वह निराश होने को तैयार नहीं था.

लेकिन फिर भी हैंस को लगता था कि एक अच्छे लेखक को शब्दों के हिज्जे लिखने आने चाहिए. इसलिए वह अपनी रचनाएं किसी के पढ़ने के लिए न देता था. इसके बजाय थियेटर के निदेशकों और अभिनेताओं को अपनी रचनाएं स्वयं पढ़ कर सुनाता था. अधिकांश लोग धीरज से उसे सुनते थे.



"देखा," हैंस ने हैमलेट से कहा. "मेरी रचनाएं इन्हें अच्छी लगती हैं. एक दिन शीघ्र ही मेरे किसी नाटक का स्टेज पर मंचन होगा."

"बेचारा हैंस," हैमलेट ने उदास स्वर में कहा. "क्या तुम्हें समझ नहीं आता? वह तुम पर तरस खाते हैं. बस अपनी विनम्रता के कारण कुछ कहते नहीं हैं."



हैंस जानता था कि हैमलेट सही था. वास्तव में बतख उसके अपनी अंतरात्मा की आवाज़ थी. लेकिन फिर भी जब हैंस सत्रह वर्ष का था उसने अपने दो नाटक रॉयल थियेटर के भेजे. निदेशकों ने उसके नाटकों का मंचन नहीं किया लेकिन जोनैस कोलिन नामक एक निदेशक ने तय किया कि हैंस को अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए राजा से अनुदान मिलना चाहिए.

"तुम्हें कुछ शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए," कोलिन ने हैंस को कहा. "अगर तुम इसी तरह गलियों में अपना समय गंवाते हुए, अद्भुत कहानियाँ रचते रहे, धनी लोगों के घरों में कुछ सिक्कों के लिए अपनी रचनाएं सुनाते रहे तो कभी न कभी तुम बुरे दिनों में फंस जाओगे."





"आपका तात्पर्य है कि मुझे भी एक अवसर मिलेगा?" हैंस ने कहा. उसका दिल धड़कने लगा था. "मैं स्कूल जा पाऊँगा? तब तो मैं सच में एक कवि बन जाऊँगा!"

"मेरी बात ध्यान से सुनो, लड़के!" कोलिन ने कहा. उन्होंने हैंस के घूर कर देखा. "मुझे लगता है कि तुम जीवन में कुछ कर सकते हो. लेकिन तुम्हें समझदारी से काम लेना होगा. तुम्हें कविता और कहानियाँ लिखना बंद करना होगा. तुम्हें पूरी लगन से पढ़ाई करनी होगी. वचन दो कि जब तक तुम स्कूल में पढ़ाई करोगे तब तक एक भी परी कथा न लिखोगे."

उनकी बात सुन हैंस बहुत निराश हुआ पर वह स्कूल जाना चाहता था इसलिए उसने वचन दिया कि कुछ समय के लिए वह कहानियाँ नहीं लिखेगा.



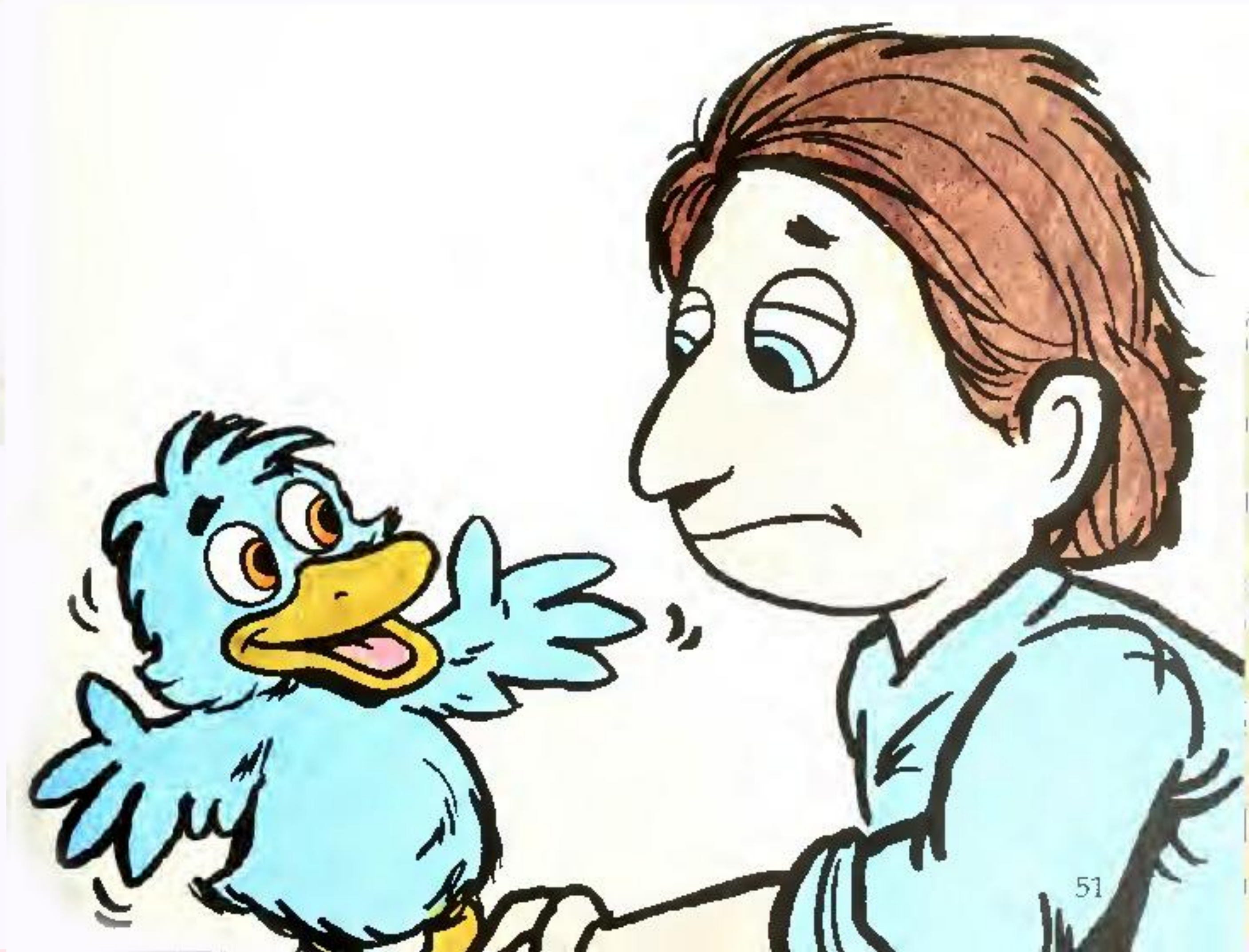
हैंस एक नगर गया जिसका नाम स्लैगएलसी था. वहाँ वह स्कूल में भर्ती हो गया और स्कूल के हैड मास्टर, मीस्लिंग के घर में रहने लगा. हैंस को लेकर मीस्लिंग बिलकुल धैर्यवान नहीं थे. उन्होंने देखा कि लड़के का मन बहुत चंचल था. हैंस को इतिहास की कई रोमांचक तथ्य याद थे और वह लंबी-लंबी कविताएं सुना सकता था. लेकिन व्याकरण का कोई ज्ञान न था और शब्दों के हिज्जे तो बिलकुल समझ न आते थे.

"तुम निरे मूर्ख हो!" हैड मास्टर मीस्लिंग ने डांटते हुए कहा. "तुम ने सुधार न किया तो तुम बरबाद हो जाओगे-या शायद पागलखाने पहुँच जाओगे!"

"उसकी बातों पर ध्यान न दो" हैमलेट ने फुसफुसा कर कहा. "वह लैटिन के शब्द और युनानी क्लास्किस भले ही जानते हों, लेकिन उनके नाखुन गंदे हैं और एक माह से वह नहाये भी नहीं हैं. और अगर तुम ने ध्यान नहीं दिया है तो समझ लो वह एक अच्छे अध्यापक नहीं हैं. वह अपने किसी विद्यार्थी को पसंद नहीं करते-और वह भी उन्हें पसंद नहीं करते."

"लेकिन अगर वह सही हैं तो?" हैंस ने कहा. "अगर मैं सच में बरबाद हो गया तो? या पागल हो गया तो?"

"ऐसा नहीं होगा," हैमलेट ने कहा. "ध्यान से सब करो और अपने काम में लगे रहो, सब अच्छा ही होगा. तुम्हें कुछ आराम करना चाहिए. इसलिए जाओ बच्चों के साथ खेलो."





जब भी हैमलेट इस प्रकार की बातें करता था तो हैंस उत्साहित हो जाता था और फिर वह वही करता था जो हैमलेट उसे कहता था. वह भीतर घर के बैठक में गया जहाँ मीस्लिंग के बच्चे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे. वह बच्चों की देखभाल करता था और उनके साथ खेलता था. इसमें अनोखा कुछ भी न था क्योंकि हैंस स्वयं उन बच्चों से थोड़ा ही बड़ा था.

जोनैस कोलिन को दिया वचन हैंस ने कभी नहीं तोड़ा. स्कूल काल में उसने न कोई कहानी लिखी और न ही कोई कविता. पर उसने यह वचन नहीं दिया था कि वह बच्चों को कोई कहानी न सुनाएगा. मीस्लिंग के बच्चों को उसकी कहानियाँ बहुत अच्छी लगती थीं. जब भी वह बैठक में आता बच्चे भाग कर उसके पास आते और उसे कोई नई कहानी सुनाने के लिए कहते.

"स्कूल की यही बात मुझे सबसे अच्छी लगती है," उसने हैमलेट से कहा-क्योंकि उस बदसूरत बतख को भी उसकी कहानियाँ अच्छी लगती थीं. जब भी हैंस जादुई महलों या जादुई राज्यों की, टीन के बहादुर सैनिकों या बोलने वाले मेंढकों की, राजकुमारों या राजकुमारियों की, उल्लुओं या बुलबुलों की कहानी सुनाता, हैमलेट उसके निकट ही रहता.





हैंस कभी भी मेधावी छात्र न बन पाया. उसका दिमाग इतनी सारी कल्पनाओं से भरा हुआ था कि उसमें किसी और बात के लिए जगह ही नहीं थी. लेकिन उसने अपने विचारों पर नियंत्रण लगाना सीख ही लिया और आखिरकार शिक्षा पाने के लिए वह कोपनहेगन विश्वविद्यालय भी गया.

"आपने जो कुछ मेरे लिए किया उसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ," विश्वविद्यालय में शिक्षा पूरी होने पर उसने जोनेस कोलिन से कहा. "अब मैं फिर से लिखना आरंभ कर सकता हूँ."

कोलिन ने आह भरी, "अपने जीवन में जो कुछ भी तुम करना चाहते हो वही करो," उन्होंने कहा. "पर मुझे आशा थी कि तुम कोई व्यवहारिक काम करोगे."



हैमलेट ने भी एक आह भरी. "तुम अभी भी शब्दों के सही हिज्जे नहीं लिख पाते," उसने हैंस को याद दिलाया. "तुम कभी भी लेटिन भाषा में सुंदर गद्य नहीं लिख पाओगे. क्या तुम कविता को भूल कर, किसी सरकारी दफ्तर में एक क्लर्क का काम नहीं करना चाहते?"

"तुम बेहतर जानते हो," हैंस ने कहा. कागज़ और कलम लेकर वह लिखने लगा. शीघ्र ही उसने एक कविता लिखी जिसका शीर्षक था, द डाइंग चाइल्ड. यह क्लासिकल या सुरुचिपूर्ण रचना नहीं थी पर हैंस ने इसे ईमानदारी और भावनाओं के साथ लिखा था.

"कविता बुरी नहीं है," हैमलेट ने कहा. "तुम शायद इसे प्रकाशित करवा सकते हो."

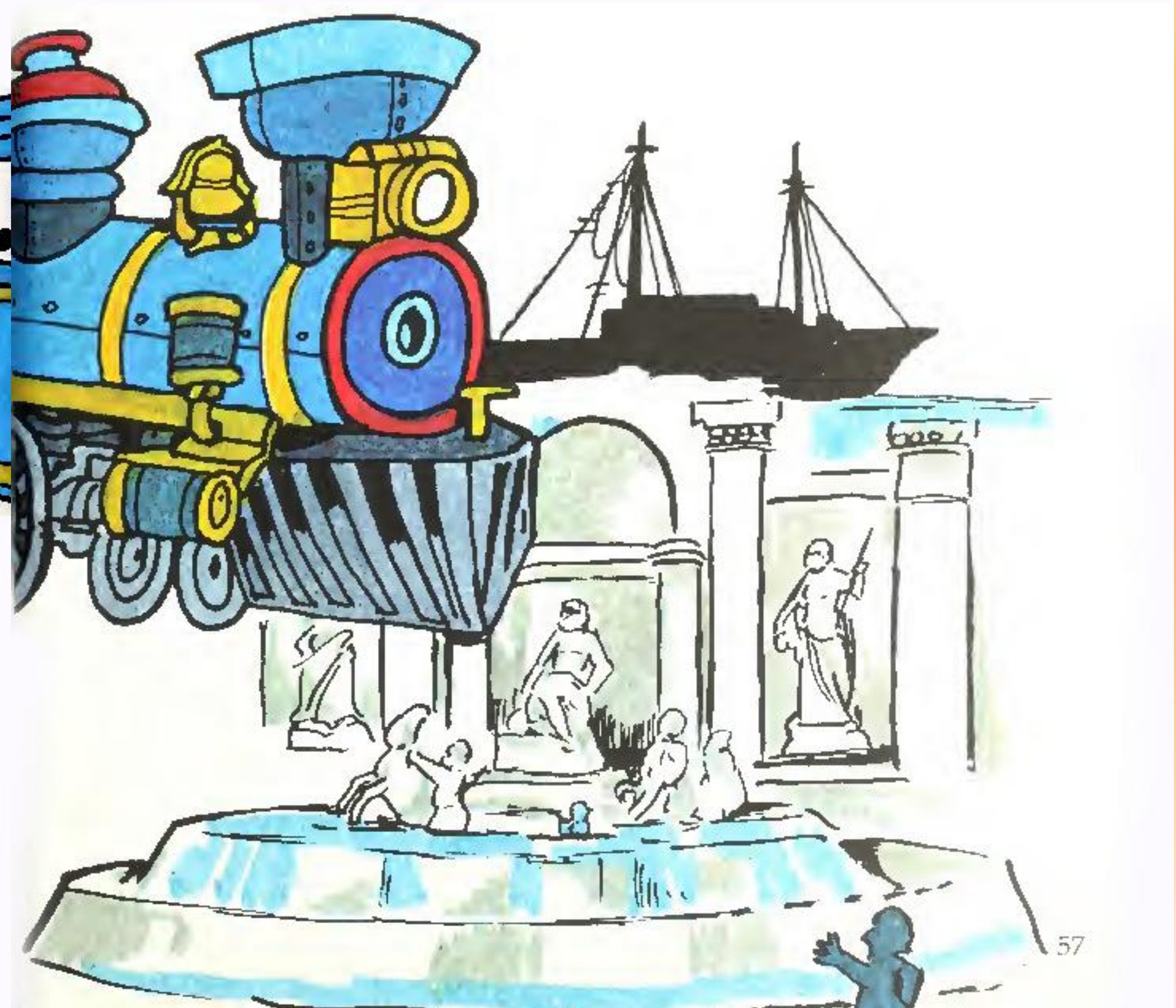
हैमलेट सही था. हैंस की कविता प्रकाशित हो गई और लोग ओडेन्से के गरीब, असहाय लड़के के बारे में अच्छी-अच्छी बातें कहने लगे. इससे हैंस का साहस बढ़ा. वह अपनी अद्‌भुत कल्पनाओं के बारे में लिखने लगा. उसकी और रचनाएं प्रकाशित होने लगीं. राजा से उसे एक और अनुदान मिला ताकि पैसों के लिए उसे चिंता न करनी पड़े.

लेकिन चिंता करना हैंस का स्वभाव बन गया था. कभी-कभी वह सोचने लगता कि उसका भविष्य कैसा होगा और आखिरकार वह क्या बनेगा?

जब भी ऐसा होता हैमलेट उसे समझाने का प्रयास करता. “यात्रा करने के समय आ गया है, हैंस,” वह कहता. “चलो उठो और अपना सामान बांधो. तुम अपने को बहुत गंभीरता से ले रहे हो. कुछ नया सोचने के लिए अब तुम्हें नया परिवेष चाहिए.”



ऐसे अवसरों पर हैंस अपना सामान बांध लेता और अपना बड़ा छाता लेकर यात्रा पर निकल पड़ता. ट्रेन या स्टीमशिप में सवार होकर वह हॉलैंड या इटली या टर्की या युनान चला जाता. हैमलेट तो सदा साथ ही जाता. हैमलेट हैंस के साथ हर जगह गया. जब वह जहाज़ में सवार होते तो हैमलेट जहाज़ के रेलिंग के पास खड़े होकर समुद्र की लहरों को देखता और उस पल को याद करता जब ग्रेट बेल्ट नामक पानी के उस विस्तार को पार करते हुए वह कल्पना करते थे कि लहरों पर जलपरियाँ तैर रही थीं, खिलवाड़ कर रही थीं.



कई कहानियाँ और कविताएं लिखने, कई चित्र बनाने और सारे यूरोप की यात्रा करने के बाद हैंस ने एक उपन्यास लिखा जिसका नाम था इंप्रोवाइज़ेटर (The Improvisator). यह वास्तव में हैंस के अपने जीवन से प्रेरित एक कहानी थी. यह पुस्तक बहुत सफल हुई. इसे खरीदने के लिए किताबों की दुकानों पर लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी.

“शानदार, क्यों है न?” हैंस ने हैमलेट से कहा. “मेरी कल्पनाएं सच हो रही हैं. मैं प्रसिद्ध हो गया हूँ और मैं यहाँ बैठा हूँ, रेशम के कपड़े और शानदार जूते पहने. कमरे में रखी अँगीठी मुझे देखकर आवाज़ें निकाल रही है. लेकिन मैं अभी भी तुम्हारी तरह बतख का एक बदसूरत बच्चा हूँ, मेरी नाक बड़ी है और ठोड़ी छोटी, लेकिन मैं बहुत प्रसन्न हूँ.”

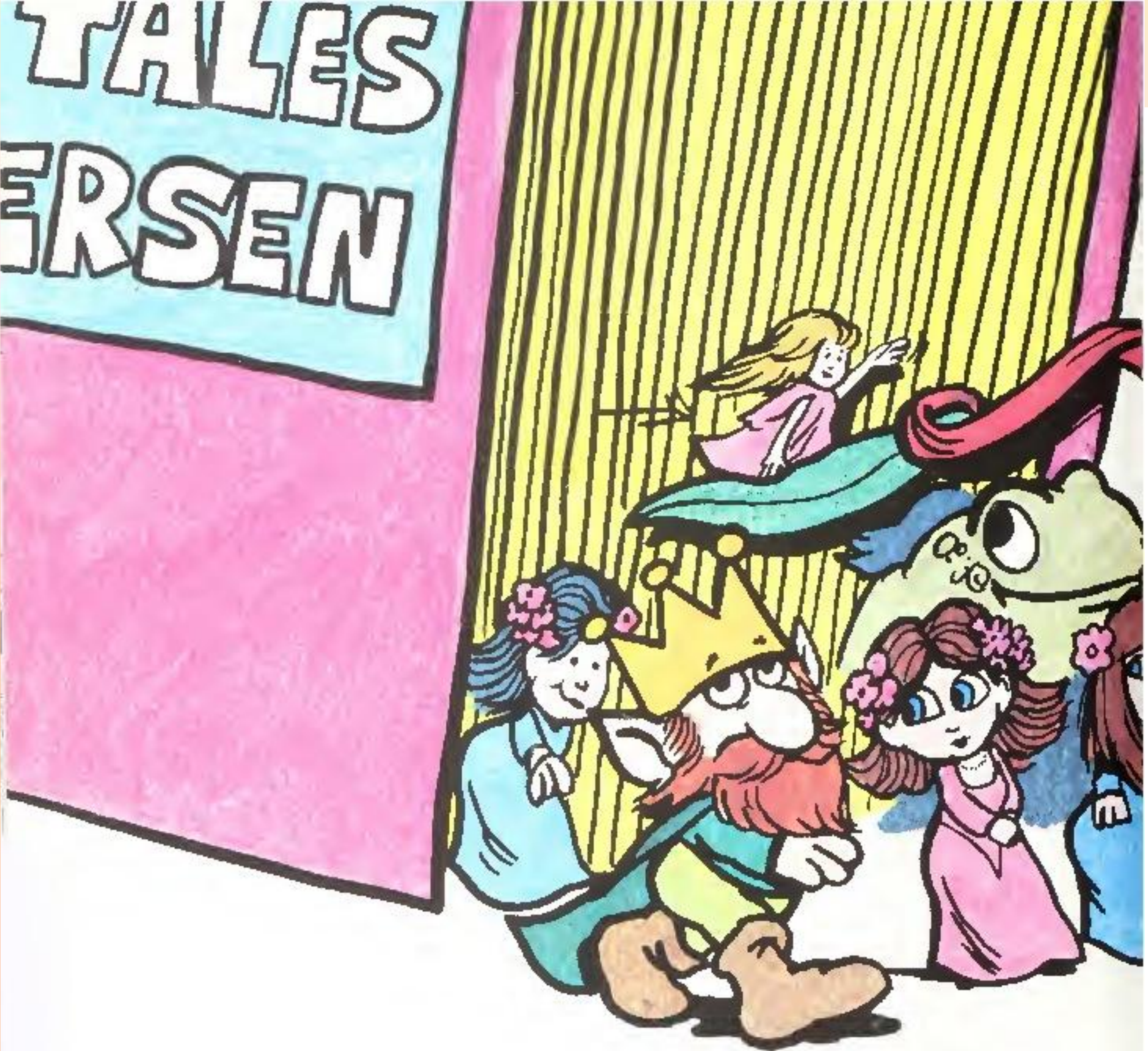
“बतख के सभी बदसूरत बच्चे हंस नहीं बनते,” हैमलेट ने कहा. “और इस तरह जीना बड़ा सुखदायक है. अपने बारे में तुम्हारी कल्पनाएं तो सच हो गई हैं, अन्य कल्पनाओं का क्या?”



हैमलेट उठ कर हैंस के पास सोफे पर बैठ गया. “मीस्लिंग के बैठक में प्रतीक्षा करते बच्चों को याद करो?” हैमलेट ने कहा. “उन सब बच्चों को याद करो जिन्होंने तुम्हारी कहानियाँ सुनी हैं? क्या उन बच्चों को कहानियां सुनाने में मज़ा नहीं आता था? क्या यह संभव नहीं है कि तुम्हारी परी कथाएं तुम्हारे उपन्यासों से अधिक सच्ची और मज़ेदार हों? वह परिकथाएं वीरता और प्रेम और अच्छाई और आशा के बारे में हैं, क्यों हैं न?”

हैमलेट ने हैंस को घूर कर देखा, “मैं तुम्हें एक रहस्य बताऊँ, हैंस क्रिस्टियन एंडरसन,” उसने हैंस से कहा, “मुझे तुम्हारी परी-कथाएं तुम्हारे उपन्यासों से अधिक अच्छी लगती हैं- और मुझे लगता है कि तुम्हें भी अधिक अच्छी लगती हैं.”





यह सच था और हैंस क्रिस्टियन यह सत्य जानता था. वह तुरंत अपनी उन कल्पनाओं के बारे में लिखने लगा. उसने उस राजकुमारी के बारे में लिखा जो मटर के दाने के कारण सो न पायी थी और उस राजा का बारे में जिसे नये कपड़े चाहिए थे. उसने उस छोटी जलपरी के बारे में लिखा जिसे एक मनुष्य से प्यार हो गया था और उस बुलबुल के बारे में जो चीन के सम्राट के लिए गाती थी.

हैंस ने बर्फ की रानी की कहानी लिखी जिसने एक छोटे लड़के का अपहरण किया था. उसने उस लड़की की कहानी लिखी जो माचिस की डिब्बियां बेचा करती थी. उसने जंगली हंसों की कहानी लिखी और उस लड़की की कहानी लिखी जिसने लाल जूते पहन कर नृत्य किया.



जब हैंस क्रिस्टियन एंडरसन ने इन कहानियों को प्रकाशित किया तो क्या हुआ होगा? यह कहानियाँ सुंदर या दिखावटी नहीं थीं. यह बच्चों के लिए सीधी-सादी कहानियाँ थीं. लेकिन यह कहानियाँ सब को पसंद आईं और हर कोई और अधिक कहानियाँ पढ़ना चाहता था.

जब यह परी-कथाएं प्रकाशित हुईं तब हैंस सच में प्रसिद्ध हो गया और फिर उसकी प्रसिद्धि में कभी कमी न आई. लेखकों को संबोधित करने के लिए उसे आमंत्रित किया जाता. जब वह इंग्लैंड गया तो महान लेखक चार्ल्स डिकंस के घर ठहरा. और जैसी उसने कल्पना की थी, वह राजाओं और सम्राटों के साथ भोजन करता था. आज भी कोपनहेगन में उसका नाम सबसे गौरवपूर्ण है. और जैसी उस बूढ़ी महिला ने भविष्यवाणी की थी, उसके सम्मान में ओडेन्से को रोशनियों से सजाया गया. आज ओडेंसे इसलिए प्रसिद्ध है कि हैंस क्रिस्टियन एंडरसन का यहाँ जन्म हुआ था

शायद तुम भी कभी-कभी काल्पनिक कहानियाँ सोचते हो- तुम भी अपने आप को ऐसी कहानियाँ सुनाते हो. शायद तुम्हारी कल्पनाएं राजाओं और राजकुमारियों या जलपरियों और बुलबुलों की नहीं होंगी. तुम्हारी कल्पनाएं बिलकुल अलग होंगी. शायद तुम्हारे मन में प्रसिद्धि पाने की इच्छा न होगी. लेकिन अगर तुम अपने जीवन में अपने सपनों और कल्पनाओं को थोड़ी जगह दोगे तो तुम पाओगे कि तुम अधिक प्रसन्न हो.

बिलकुल हमारे अच्छे मित्र हैंस क्रिस्टियन एंडरसन की तरह.



